BHAI HARJINDER SINGH JI

Bhai Harjinder Singh Ji, is a melodious and proficient Kirtan Singer. In the world of Gurbani Kirtan, he has created his niche and unique identity by reviving ancient Ragas and rituals, singing new Bandishs and recording an adjectival Shabad series.

2. Born on 1st April, 1958 in the village of Ballarh Wal in Gurdaspur district of Punjab, Bhai Harjinder Singh Ji completed his matriculation in 1975 from Government High School, Mari Buchiyan (Gurdaspur). He took admission in Shaheed Sikh Missionary College Amritsar for Gurmat Gyan and Music education. After studying Gurmat literature and raga arrangement for three years, he devoted himself to Nishkam Kirtan.

3. From 1980 to 1983, Bhai Harjinder Singh Ji served as a Hazuri Raagi at Gurdwara Shri Guru Singh Sabha Amira Kadal in Srinagar (Jammu and Kashmir). Bhai Harjinder Singh Ji served as a Hazuri Raagi at Gurdwara Shri Guru Singh Sabha Sabzi Mandi, Ludhiana from 1983 to 1987 and at Gurdwara Shri Guru Singh Sabha Kalgidhar, Ludhiana from 1987 to 1989. After this, he has been engaged in independent Kirtan service till now. He got his first audio cassette "Sab Desh Paraya" recorded in 1985. Till now he has recorded more than 700 Gurbani Shabads. He has also served as a Nishkam Kirtaniya at Sri Harmandir Sahib Amritsar (Punjab) regularly since 1986. Through his religious preachings he has transformed life of many souls and guided them to follow right path of life.

4. Bhai Harjinder Singh Ji is also a torchbearer when it comes to preserving our environment. He strongly believes in first Sikh Guru, Guru Nanak Dev Ji's preaching "Pawan Guru, Pani Pita, Mata Dharat Mahatt" (Air is the Guru, Water the Father, and Earth is the Mother).Through his "Bhai Ladha Ji Parupkari Organisation", he has been actively associated with social work, where all kinds of support are being provided to the needy from all religions. He is also an Executive member of Dhan Guru Ramdas Langar Organisation, Hoshiarpur, that provides free food (langar) daily to over 50000 of people in all Government Civil Hospital in Punjab.

5. Bhai Harjinder Singh Ji has received honours from many Religious Organizations, National and International Cultural forums, Government and Non-Government institutions. In 1991, he was awarded the "Adutti Gurmat Sangeet Award" by Gurdwara Gurgyan Parkash located in Jawaddi Kalan (Ludhiana). Prof. Mohan Singh Memorial Foundation (Regd.) Ludhiana honoured him with the Prof. Mohan Singh Memorial Kirtan Sewa Award in 1994. In the year 2002, he was presented with the Siftee Award for Gurmat Kirtan Sewa. Akal Purakh Ki Fauj Sanstha Amritsar honoured him with the "Sikh Gaurav Puraskar" in 2003. United Sikh Organization honoured him in 2003. The Language Department of Punjab, awarded him with the "Shiroman Raagi Award" for the year 2005. In the year 2011, he was honoured with the "Punjab Raj Puraskar". He was awarded the title of "Shiromani Panthak Raagi" by the apex institution of the Sikh Panth, "Shri Akal Takht Sahib". The California State Assembly of America also gave a letter of appreciation in the year 2021. He has also been honoured with more than 25 gold medals through various Religious Organizations.

भाई हरजिंदर सिंह जी

भाई हरजिंदर सिंह जी एक मनमोहक एवं कुशल कीर्तन गायक हैं। गुरबानी कीर्तन जगत में उन्होंने प्राचीन रागों और रीति–रिवाजों को पुनर्जीवित करके, नई बंदिशें गाकर और विशेषणात्मक शबद श्रृंखलाएँ रिकॉर्ड करके अपनी अलग पहचान बनाई है।

2. 01 अप्रैल, 1958 को पंजाब के गुरदासपुर जिले के बल्लारह वाल गांव में जन्मे, भाई हरजिंदर सिंह जी ने वर्ष 1975 में गवर्नमेंट हाई स्कूल, माड़ी बुचियां (गुरदासपुर) से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने गुरमत ज्ञान और संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहीद सिख मिशनरी कॉलेज अमृतसर में दाखिला लिया। तीन वर्षों तक गुरमत साहित्य और राग संयोजन का अध्ययन करने के बाद उन्होंने निष्काम कीर्तन के लिए स्वंय को समर्पित कर दिया।

3. वर्ष 1980 से 1983 तक भाई हरजिंदर सिंह जी ने श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा अमीरा कदल में हजूरी रागी के रूप में सेवा की। भाई हरजिंदर सिंह जी ने वर्ष 1983 से 1987 तक गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा सब्जी मंडी, लुधियाना में और वर्ष 1987 से 1989 तक गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा कलगीधर, लुधियाना में हजूरी रागी के रूप में सेवा की। इसके पश्चात वे अब तक स्वतंत्र कीर्तन सेवा के लिए समर्पित हैं। उन्होंने वर्ष 1985 में अपनी पहली रेकोर्डेड ऑडियो कैसेट "सब देश पराया" पेश की। अब तक उन्होंने 700 से अधिक गुरबानी शबद रिकॉर्ड किए हैं। उन्होंने वर्ष 1986 से श्री हरमंदिर साहिब अमृतसर (पंजाब) में निष्काम कीर्तनिया के रूप में भी नियमित सेवा की है। अपने धार्मिक उपदेशों के माध्यम से उन्होंने कई श्रद्धालुओं के जीवन को बदल दिया है और उन्हें जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन दिया है।

4. भाई हरजिंदर सिंह जी पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी पथप्रदर्शक रहे हैं। वे पहले सिख गुरु, गुरु नानक देव जी के उपदेश "पवन गुरु, पानी पिता, माता धरत महत्त" (वायु गुरु है, जल पिता है, और पृथ्वी माता है) में अटूट विश्वास रखते हैं। अपने "भाई लधा जी परोपकारी संगठन" के माध्यम से, वे सामाजिक कार्यों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं, जहाँ सभी धर्मों के जरूरतमंदों को हर प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। वे धन गुरु रामदास लंगर संगठन, होशियारपुर के कार्यकारी सदस्य भी हैं, जो पंजाब के सभी सरकारी सिविल अस्पतालों में प्रतिदिन 50000 से अधिक लोगों को मुफ्त भोजन (लंगर) उपलब्ध कराता है।

5. भाई हरजिंदर सिंह जी को कई धार्मिक संगठनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंचों, सरकारी और गैर–सरकारी संस्थानों की ओर से सम्मानित किया गया है। वर्ष 1991 में, उन्हें जवद्दी कलां (लुधियाना) स्थित गुरुद्वारा गुरज्ञान प्रकाश द्वारा "अदुत्ती गुरमत संगीत पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। प्रो. मोहन सिंह मेमोरियल फाउंडेशन (रजिस्टर्ड) लुधियाना ने उन्हें वर्ष 1994 में प्रो. मोहन सिंह मेमोरियल कीर्तन सेवा अवार्ड से सम्मानित किया। वर्ष 2002 में, उन्हें गुरमत कीर्तन सेवा के लिए सिफ्ती अवार्ड से सम्मानित किया गया। अकाल पुरख की फौज संस्था,अमृतसर ने उन्हें वर्ष 2003 में "सिख गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया। यूनाइटेड सिख संगठन ने उन्हें वर्ष 2003 में सम्मानित किया। पंजाब के भाषा विभाग ने उन्हें वर्ष 2005 के लिए "शिरोमणि रागी पुरस्कार" से सम्मानित किया। वर्ष 2011 में उन्हें "पंजाब राज पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। सिख पंथ की सर्वोच्च संस्था "श्री अकाल तख्त साहिब" द्वारा उन्हें "शिरोमणि पंथक रागी" की उपाधि से सम्मानित किया गया। अमेरिका की कैलिफोर्निया स्टेट असेंबली ने भी वर्ष 2021 में प्रशंसा पत्र प्रदान किया। उन्हें विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा 25 से अधिक स्वर्ण पदकों से भी सम्मानित किया जा चुका है।